**अनुक्रमणिका**

* प्रस्तावना (ii)
* प्रथम अध्यायः लोकगीतों की पृष्ठभूमि 1-37
  + लोकगीत परिभाषा
  + लोकगीत स्वरूप
  + लोकगीत विकास
  + लोकगीतों का वर्गीकरण
* द्वितीय अध्यायः गुजराती लोकगीत 38-117
  + संस्कार गीत
  + देवी-देवताओं के गीत
  + ऋतुओं के गीत
  + व्रत और त्यौहारों के गीत
  + श्रम गीत
* तृतीय अध्यायः राजस्थानी लोकगीत 118-197
  + संस्कार गीत
  + देवी-देवताओं के गीत
  + ऋतुओं के गीत
  + व्रत एवं त्यौहारों के गीत
  + श्रम गीत
* चतुर्थ अध्यायः गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का

तुलनात्मक अध्ययन 198-315

* + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः लोरियाँ
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः बालगीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः हास्य गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः वीर गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः विवाह गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः दाम्पत्य गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः श्रमिक गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः भक्ति गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः प्रकृति के गीत
  + गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः प्रकीर्ण गीत
* पंचम अध्यायः उपसंहार 316-321
* आधारभूत ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ 322-326

**प्रस्तावना**

प्रथम शोध परियोजना के सन्दर्भ में मैंने विचार किया था कि मैं एक ऐसा काम करुं जो बिल्कुल अपने-आप में नया हो और अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो। इसलिए यू.जी.सी. की बृहद शोध परियोजना के तहत – "गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय को लेकर काम करने का मन बनाया। प्रस्तुत विषय को लेकर शोधकार्य करने की प्रेरणा के मुख्य दो अनुभव है। एक बचपन से ही मेरी मां के मुख से लोकगीतों को सुनता आया हूँ। मां लोकगीतों के सभी प्रकारों पर गीत सुनाती है। कभी-कभी तो कहावतों में ही बाते करती हैं। अत: बचपन से ही लोकगीतों के प्रति रूचि पेदा हुई। दूसरा जब महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अस्थायी प्रवक्ता के रूप में जुड़ा उसी वर्ष जोधपुर से प्रकासित पत्रिका ‘लूर’ के संपादक आदरणीय डॉ.जयपालसिंह जी ने कहा की ‘लूर’(पत्रिका) लोरी विशेषांक निकालने जा रहा हूँ। आप शीघ्रातिशीघ्र आलेख भेजिए। अतः मेरे जीवन का प्रथम शोधलेख मैंने उनके कहने पर ‘गुजराती लोरी पालना गीत’ पर लिखा। इस लेख को आदरणीय डॉ.जयपालसिंहजी ने बहुत सराहा। बाद में तो ‘लूर’ के सभी अंको जैसे लोरी, बन्नागीत, बन्नीगीत, ऋतुगीत, श्रमगीत, पक्षीओं के गीत आदि सभी विशेषांको में नियमित रूप से लिखता रहा हूँ। अतः राजस्थान से निकलने वाली एक स्तरिय पत्रिका जिसमें राजस्थानी एवम् भारत की सभी भाषाओँ के लोकगीतों के मर्मज्ञ के शोधालेखों को पढ़ने का अवसर मिला। इस तरह राजस्थानी लोकसाहित्य(लोकगीत) को ‘लूर’ के माध्यम से बहुत ही गहराई से जानने समझने का अवसर मिलता रहा। गुजराती मातृभाषा होने के साथ-साथ विश्वविद्यालय में गुजराती लोकसाहित्य पर एक प्रश्नपत्र पढ़ने के कारण जब बृहत शोध परियोजना के तहत विषय चयन का प्रश्न सामने आया तब सबसे पहले मन में एक ही विषय कौंध गया ‘गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन’।

लोकसाहित्य में जनसामान्य की भावोर्मियां उन्मुक्त रूप से मुखरित होती हैं। सामान्य रूप से यह अभिव्यक्ति जनसामन्य को प्रभावित करती है। मेरी जन्मभूमि गुजरात है। गुजरात की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संरचना को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है एक कच्छ, दूसरा सौराष्ट्र और तीसरा शेष गुजरात। सौभाग्य से मेरा तीनो से गहरा संबंध रहा वहां की परम्पराओं,विश्वासों, रहन-सहन, इतिहास और लोक मान्यताओं से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। कच्छ जाड़ेजा शासकों द्वारा शासित प्रदेश रहा अतः जाड़ेजा कुल में जन्म लेने से वहां की सभी लोक परम्पराओं से भलीभांति परिचित हूँ। सौराष्ट्र में हमारा मूलगाँव होने से एवम् सभी रिश्ते-नाते उसी प्रदेश के लोगों के साथ होने के कारण सौराष्ट्र की धरती का परिचय भी प्राप्त हुआ और शेष गुजरात में दक्षिण गुजरात में जन्म हुआ और स्कूली शिक्षा वहीँ संपन्न हुई तथा मध्यगुजरात में शेष पढाई और आज इसी प्रदेश की विश्वविख्यात विश्वविद्यालय में अध्यापक कार्य करते हुए निवास करता हूँ। अतः गुजराती लोकसाहित्य की पर्याप्त जानकारी रखता हूँ। गुजराती होने के कारण गुजराती भाषा तथा संस्कारों की छाप मुझ पर पडी है। उसी तरह ‘लूर’ के माध्यम से राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति (लोकसंस्कृति) ने भी मुझे प्रभावित किया।

लोकसाहित्य मेरी रूचि का विषय होने के कारण लोकगीतों के प्रति मेरा रुझान रहा तथा इस शोध परियोजना के दौरान राजस्थान तथा वहां के लोकगीतों से भी विस्तार से परिचित हुआ। धीरे-धीरे डॉ.जयपालसिंहजी राठोड़ एवम् डॉ.महिपालसिंहजी राठोड (जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग) के घनिष्ठ सम्पर्क ने उसे और बढ़ावा दिया।

इस शोध परियोजना की प्रक्रिया की बात करूं तो मुख्यतः विधा के भंडार ऐसी पुस्तकालयों में स्वयं जाकर पुस्तकें प्राप्त की, जिसमें महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय पुस्तकालय भी है, जो श्रीमती हंसा मेहता लायब्रेरी के नाम से विश्वविख्यात है। मैंने पता लगाया कि मेरे विषय से सम्बंधित पुस्तकें हैं या नहीं? दूसरे अनेक पुस्तकालयों का दौरा किया। पत्र-पत्रिकाओं के लेख आदि देखना प्रारंभ किया, समाचार-पत्रों में आनेवाले समाचारों में खास करके गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों से सम्बंधित जो सामग्री उपलब्ध होती थी, उसे एक तरफ रखता जाता था। आज का युग कम्प्यूटर व माहिती के विस्फोट का युग कहा जाता है। बिना इंटरनेट दुनिया की जानकारी हासिल करना मुश्किल ही नहीं, असंभव-सा लगता है। मैंने इस सुविधा को उपलब्ध किया। मेरे दिलोदिमाग में हमेशा मेरा लक्ष्य रहा, जिससे बात-चीत होती, मेरा यही लक्ष्य रहता कि मैं गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों पर काम कर रहा हूँ और उससे सम्बंधित साहित्य जुटाना है। निरन्तर मनन-मंथन करता हुआ, मैं किताबें पढ़ता, विद्वानों से सलाह-मशवरा करता, मुझे यदि पता चलता तो उन साहित्यकारों, आलोचकों, विषय के ज्ञाताओं के पास पहुँच जाता। गुजरात और गुजरात के बाहर खासकर राजस्थान प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जितना मुझसे हो पाया, मैंने इस विषय से सम्बंधित यथा सामग्री जुटाने का हरसंभव प्रयास किया। पुस्तकालयों, इंटरनेट, मोबाइल, टेलीफोन, साक्षात्कार आदि से मैंने सामग्री जुटायी है।

इस परियोजना के विषय से सम्बंधित अनुभव मुझे प्राप्त हुए हैं। इस परियोजना से गुजरते हुए मैं खुशी का अनुभव कर रहा हूँ। गुजराती एवं राजस्थानी दोनों भाषाओं के लोक-साहित्यकारों से सरोकार हुआ। उनके साथ बात-चीत करने के उपरान्त खास करके विद्वानों के सम्पर्क में आया और उनसे परिचित हुआ।

परियोजना को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया हैः

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| प्रथम अध्याय | लोकगीतों की पृष्ठभूमि |  |
| द्वितीय अध्याय | गुजराती लोकगीत |  |
| तृतीय अध्याय | राजस्थानी लोकगीत |  |
| चतुर्थ अध्याय | गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का अध्ययन |  |
| पंचम अध्याय | उपसंहार |  |

प्रथम अध्याय लोकगीतों की पृष्ठभूमि के अंतर्गत लोकगीतों की परिभाषा, स्वरुप, विकास और वर्गीकरण के माध्यम से लोकगीतों का परिचय प्राप्त किया गया है । जिसमें लोकगीतों की परिभाषा एवं स्वरुप को भारतीय दृष्टिकोण तथा विशेषकर गुजराती एवं राजस्थानी लोकगीतों के विशेषज्ञ द्वारा प्रस्तुत लोकगीतों की परिभाषा तथा वर्गीकरण को आधार बनाकर अगले अध्याय के लिए बुनियादी ढाँचा तैयार किया गया है ।

दूसरे अध्याय के अंतर्गत के ' गुजराती लोकगीतों ' की समृद्ध परम्परा को उपविभागों जैसे कि संस्कार गीत, देवी-देवताओं के गीत, ऋतुओं की गीत, व्रत एवं त्यौहारों के गीत एवं श्रम के लोकगीतों में विभाजित कर उसका विशद् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । प्रस्तुत अध्याय गुजराती लोकगीतों की बहुआयामी परम्परा का परिचायक है ।

तृत्तीय अध्याय ' राजस्थानी लोकगीतों ' की जानकारी प्रस्तुत करता है । राजस्थान अपनी प्राचीनतम सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से धनी प्रदेश है । उस प्रदेश के प्रत्येक कण एवं चंद लोक साहित्य को प्रतिबिंबित करते है । भारतीय लोकगीतों की परम्परा में राजस्थानी लोकगीत इस देश की संस्कृति के अमूल्य निधि है । जिसका प्रमाण इस अध्याय से प्राप्त होता है ।

चतुर्थ अध्याय इस शोध परियोजना का प्राण है । जिसमें हमने ' गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन ' प्रस्तुत किया है । दोनों प्रदेशों में मिलने वाले लोकगीतों को कई उपविभागों में विभाजित कर उसके मूल तथा उसमें प्राप्य समानता असमानता के स्तर पर रखकर उसका मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है । जो अनेक नवीन तथ्यों को उजागर करता है ।

पंचम अध्याय को निष्कर्ष के रुप में प्रस्तुत करते हुए हमने विषय से संबंधित स्थापनाओं का उल्लेख किया है । जिससे दोनों प्रदेशों के लोकगीतों में उपलब्ध वस्तु को सहजता से समझने का प्रयत्न किया गया है ।

कला संकाय के डीन प्रो. कृष्नन की प्रेरणा व ज्ञान का लाभ हमेशा मुझे प्राप्त हुआ है। आज से तीन वर्ष पूर्व जब मैंने इस परियोजना को प्रस्तुत किया तो तत्कालीन डीन प्रो. प्रदीपसिंह चूण्डावत ने कहा था- "ऐसे कार्य आपके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।" इस अवसर पर मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धा ज्ञापित करता हूँ। कला संकाय के स्टूडेंट डीन प्रो. संजय करंदिकर का आभार मानता हूँ। हिंदी विभाग के मेरे मित्र डॉ.एन.एस.परमार को कैसे भूल सकता हूँ, जिनका निरंतर सहयोग मुझे मिलता रहा।

इस परियोजना से गुजरते हुए कला संकाय के कर्मचारी गण, ऑडिट विभाग के प्रशासनिक अधिकारी गण एवं कर्मचारियों और यूनिवर्सिटी अकाउण्ट विभाग का भी मैं आभार मानता हूँ कि इस परियोजना के दौरान उनका सहकार मुझे मिलता रहा।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के ओ.एस.डी. रजिस्ट्रार प्रो. नीरजा जैसवाल और आदरणीय वाइस चान्सलर प्रो. परिमल व्यास को मैं कैसे भूल सकता हूँ कि जिन्होंने इस परियोजना के दौरान मेरे कार्य में कभी रुकावट नहीं आने दी। आपके सहयोग-सहकार हेतु मैं आपके प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति ज्ञापित करता हूँ।

मैं विद्यार्थी काल से इसी विश्वविद्यालय का छात्र रहा हूँ अतः मेरी प्रेरणा क स्रोत भी विश्वविद्यालय परिवार रहा है। इस अवसर पर मैं उन गुरुजनों का तहेदिल से आभार मानता हूँ कि मुझे उनके ज्ञान का लाभ मिलता रहा।

इस बृहद परियोजना को सम्पन्न करने हेतु म.स. विश्वविद्यालय के अलावा गुजरात और देश के विभिन्न प्रांतों के विद्वानों, जिनमें गुजरात के लोकसाहित्य के विद्वजनों में डॉ. हसु याज्ञिक, ख्यातनाम लोकसाहित्यकार श्री जोरावरसिंह जाधव, प्रो. जयानंदभाई जोशी, डॉ. गजेन्द्र मीणा, डॉ. जोहरा बानू ढोलिया, श्री उमियाशंकर अजाणी, डॉ. दर्शना ढोलकिया आदि साहित्यज्ञाताओं व बुद्धिजीवियों, समाजसेवकों, विभिन्न संस्थाओं, अनेक पुस्तकालयों आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। उनके बगैर मेरा कार्य अधूरा रह जाता । इस अवसर पर इन तमाम के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

साथ ही राजस्थानी लोकसाहित्य के मर्मज्ञ डॉ.महेन्द्र भानावत, डॉ.नवीन नंदवाना उदयपुर, डॉ.शिवलाल टेलर, डॉ.रमेश टेलर चित्तोडगढ, प्रो.सत्यनारायण व्यास, श्रीमती चंद्रकांता व्यास, श्री विजय वर्मा जयपुर, डॉ.किरण नाहटा, डॉ.मुरारी शर्मा बिकानेर, डॉ.जयपालसिंह राठोड तथा डॉ.महिपालसिंह राठोड, प्रो.नंदलाल कल्ला, विक्रमसिंह भाटी जोधपुर आदि महानुभावो तथा विभिन्न संस्थाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

परियोजना को सफल बनाने में यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन, नई दिल्ली ने मुझे वित्तीय सहायता प्रदान की है। आर्थिक सहयोग के बिना ये कार्य संपन्न करना मेरे लिए मुश्किल था। मैं आयोग का तहेदिल से आभार मानता हूँ।

जिस परिवार में मैंने जन्म लिया है, उनका स्नेह हमेशा मुझे मिलता रहा है....

इस बृहद परियोजना को पूर्ण करने में शेलत सोहिल ने प्रोजेक्ट फेलो के रूप में कार्य किया एवं मेरे शोधार्थी विजय प्रकाश यादव का भी इस परियोजना में महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

शोध परियोजना के रिपोर्ट के टंकण का कार्य एकता ग्राफिक्स, वडोदरा के श्री प्रवीण मोरे ने उपयुक्त समय पर मुझे उपलब्ध करवाया, अतः मैं इस अवसर पर उनका आभार ज्ञापित करता हूँ।

अतः मैं इस शोध परियोजना के सन्दर्भ में जिन विद्वानों, मित्रों, साथी, प्राध्यापक गण, विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी और कर्मचारियों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मुझे सहकार दिया है, मैं उन सबका तहेदिल से आभार मानता हूँ।

प्रो. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा

प्रिन्सिपल इन्वेस्टीगेटर

यू.जी.सी. मेजर रीसर्च प्रोजेक्ट

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

गुजरात